Resource: अनुवाद प्रश्न (unfoldingWord)

unfoldingWord® Translation Questions © 2022 unfoldingWord. Released under CC BY-SA 4.0 license. unfoldingWord® Translation Questions has been adapted in the following languages: Tok Pisin, Arabic (عربي), French (Français), Hindi (हिंदी), Indonesian (Bahasa Indonesia), Portuguese (Português), Russian (Русский), Spanish (Español), Swahili (Kiswahili), and Simplified Chinese (简体中文) from unfoldingWord® Translation Questions © 2022 unfoldingWord. Released under CC BY-SA 4.0 license by Mission Mutual

अनुवाद प्रश्न (unfoldingWord)

PRO

नीतिवचन 1:1, नीतिवचन 1:3, नीतिवचन 1:5, नीतिवचन 1:7, नीतिवचन 1:8, नीतिवचन 1:10, नीतिवचन 1:13, नीतिवचन 1:16, नीतिवचन 1:19, नीतिवचन 1:20–21, नीतिवचन 1:24–25, नीतिवचन 1:26, नीतिवचन 1:28, नीतिवचन 1:31, नीतिवचन 1:33, नीतिवचन 2:1, नीतिवचन 2:3–4, नीतिवचन 2:5, नीतिवचन 2:7, नीतिवचन 2:9, नीतिवचन 2:11–13, नीतिवचन 2:15, नीतिवचन 2:17, नीतिवचन 2:18, नीतिवचन 2:20, नीतिवचन 2:21, नीतिवचन 2:22, नीतिवचन 3:1–2, नीतिवचन 3:3, नीतिवचन 3:5, नीतिवचन 3:7, नीतिवचन 3:9, नीतिवचन 3:12, नीतिवचन 3:14, नीतिवचन 3:17, नीतिवचन 3:19, नीतिवचन 3:21–22, नीतिवचन 3:24, नीतिवचन 3:25, नीतिवचन 3:27, नीतिवचन 3:29, नीतिवचन 3:32, नीतिवचन 3:34, नीतिवचन 3:35, नीतिवचन 4:1–2, नीतिवचन 4:4, नीतिवचन 4:6, नीतिवचन 4:8–9, नीतिवचन 4:11, नीतिवचन 4:13, नीतिवचन 4:14–15, नीतिवचन 4:16, नीतिवचन 4:18, नीतिवचन 4:19, नीतिवचन 4:23, नीतिवचन 4:24, नीतिवचन 4:25, नीतिवचन 5:1, नीतिवचन 5:4, नीतिवचन 5:5, नीतिवचन 5:8, नीतिवचन 5:9, नीतिवचन 5:11, नीतिवचन 5:12, नीतिवचन 5:15, नीतिवचन 5:18, नीतिवचन 5:19, नीतिवचन 5:21, नीतिवचन 5:22, नीतिवचन 6:1–2, नीतिवचन 6:3, नीतिवचन 6:6, नीतिवचन 6:8, नीतिवचन 6:11, नीतिवचन 6:12, नीतिवचन 6:15, नीतिवचन 6:16, नीतिवचन 6:18, नीतिवचन 6:19, नीतिवचन 6:23, नीतिवचन 6:26, नीतिवचन 6:30, नीतिवचन 6:32, नीतिवचन 6:35, नीतिवचन 7:1–2, नीतिवचन 7:4–5, नीतिवचन 7:6–7, नीतिवचन 7:10, नीतिवचन 7:12, नीतिवचन 7:14, नीतिवचन 7:15, नीतिवचन 7:16–18, नीतिवचन 7:19, नीतिवचन 7:22, नीतिवचन 7:23, नीतिवचन 7:25, नीतिवचन 7:27, नीतिवचन 8:1–3, नीतिवचन 8:4, नीतिवचन 8:6–7, नीतिवचन 8:11, नीतिवचन 8:13, नीतिवचन 8:15–16, नीतिवचन 8:19, नीतिवचन 8:21, नीतिवचन 8:23, नीतिवचन 8:26–27, नीतिवचन 8:30, नीतिवचन 8:31, नीतिवचन 8:35, नीतिवचन 8:36, नीतिवचन 9:1, नीतिवचन 9:3–4, नीतिवचन 9:6, नीतिवचन 9:7–8, नीतिवचन 9:8, नीतिवचन 9:10, नीतिवचन 9:10 (#2), नीतिवचन 9:13, नीतिवचन 9:17, नीतिवचन 9:18, नीतिवचन 10:1, नीतिवचन 10:3, नीतिवचन 10:4, नीतिवचन 10:6, नीतिवचन 10:8, नीतिवचन 10:12, नीतिवचन 10:13, नीतिवचन 10:17, नीतिवचन 10:19, नीतिवचन 10:22, नीतिवचन 10:25, नीतिवचन 10:26, नीतिवचन 10:27, नीतिवचन 10:29, नीतिवचन 10:31, नीतिवचन 11:2, नीतिवचन 11:4, नीतिवचन 11:6, नीतिवचन 11:8, नीतिवचन 11:9, नीतिवचन 11:13, नीतिवचन 11:15, नीतिवचन 11:18, नीतिवचन 11:20, नीतिवचन 11:21, नीतिवचन 11:24, नीतिवचन 11:25, नीतिवचन 11:28, नीतिवचन 11:30, नीतिवचन 11:31, नीतिवचन 12:1, नीतिवचन 12:2, नीतिवचन 12:4, नीतिवचन 12:5, नीतिवचन 12:7, नीतिवचन 12:10, नीतिवचन 12:13, नीतिवचन 12:15, नीतिवचन 12:18, नीतिवचन 12:20, नीतिवचन 12:22, नीतिवचन 12:24, नीतिवचन 12:26, नीतिवचन 12:28, नीतिवचन 13:1, नीतिवचन 13:3, नीतिवचन 13:4, नीतिवचन 13:7, नीतिवचन 13:8, नीतिवचन 13:10, नीतिवचन 13:11, नीतिवचन 13:14, नीतिवचन 13:16, नीतिवचन 13:18, नीतिवचन 13:20, नीतिवचन 13:22, नीतिवचन 13:24, नीतिवचन 13:25, नीतिवचन 14:1, नीतिवचन 14:2, नीतिवचन 14:5, नीतिवचन 14:7, नीतिवचन 14:11, नीतिवचन 14:11 (#2), नीतिवचन 14:14, नीतिवचन 14:16, नीतिवचन 14:17, नीतिवचन 14:19, नीतिवचन 14:22, नीतिवचन 14:23, नीतिवचन 14:27, नीतिवचन 14:29, नीतिवचन 14:31, नीतिवचन 14:34, नीतिवचन 15:1, नीतिवचन 15:3, नीतिवचन 15:5, नीतिवचन 15:8, नीतिवचन 15:10, नीतिवचन 15:13, नीतिवचन 15:16, नीतिवचन 15:18, नीतिवचन 15:20, नीतिवचन 15:22, नीतिवचन 15:25, नीतिवचन 15:28, नीतिवचन 15:31, नीतिवचन 15:33, नीतिवचन 16:2, नीतिवचन 16:4, नीतिवचन 16:6, नीतिवचन 16:9, नीतिवचन 16:12, नीतिवचन 16:14, नीतिवचन 16:16, नीतिवचन 16:18, नीतिवचन 16:20, नीतिवचन 16:23, नीतिवचन 16:25, नीतिवचन 16:28, नीतिवचन 16:30, नीतिवचन 16:31, नीतिवचन 16:32, नीतिवचन 16:33, नीतिवचन 17:2, नीतिवचन 17:4, नीतिवचन 17:5, नीतिवचन 17:8, नीतिवचन 17:10, नीतिवचन 17:12, नीतिवचन 17:14, नीतिवचन 17:15, नीतिवचन 17:18, नीतिवचन 17:20, नीतिवचन 17:22, नीतिवचन 17:25, नीतिवचन 17:28, नीतिवचन 18:2, नीतिवचन 18:3, नीतिवचन 18:6, नीतिवचन 18:8, नीतिवचन 18:10, नीतिवचन 18:12, नीतिवचन 18:14, नीतिवचन 18:17, नीतिवचन 18:19, नीतिवचन 18:21, नीतिवचन 18:23, नीतिवचन 19:2, नीतिवचन 19:5, नीतिवचन 19:7, नीतिवचन 19:8, नीतिवचन 19:11, नीतिवचन 19:13, नीतिवचन 19:14, नीतिवचन 19:17, नीतिवचन 19:19, नीतिवचन 19:20, नीतिवचन 19:23, नीतिवचन 19:24, नीतिवचन 19:26, नीतिवचन 19:28, नीतिवचन 20:2, नीतिवचन 20:3, नीतिवचन 20:6, नीतिवचन 20:9, नीतिवचन 20:11, नीतिवचन 20:13, नीतिवचन 20:15, नीतिवचन 20:17, नीतिवचन 20:20, नीतिवचन 20:22, नीतिवचन 20:25, नीतिवचन 20:28, नीतिवचन 20:29, नीतिवचन 21:1, नीतिवचन 21:3, नीतिवचन 21:6, नीतिवचन 21:7, नीतिवचन 21:10, नीतिवचन 21:11, नीतिवचन 21:14, नीतिवचन 21:16, नीतिवचन 21:19, नीतिवचन 21:22, नीतिवचन 21:24, नीतिवचन 21:27, नीतिवचन 21:30, नीतिवचन 21:31, नीतिवचन 22:2, नीतिवचन 22:4, नीतिवचन 22:6, नीतिवचन 22:7, नीतिवचन 22:10, नीतिवचन 22:13, नीतिवचन 22:14, नीतिवचन 22:15, नीतिवचन 22:19, नीतिवचन 22:22, नीतिवचन 22:23, नीतिवचन 22:25, नीतिवचन 22:27, नीतिवचन 22:28,

नीतिवचन23:1, नीतिवचन23:4, नीतिवचन23:5, नीतिवचन23:7, नीतिवचन23:9, नीतिवचन23:11, नीतिवचन23:13, नीतिवचन 23:16, नीतिवचन 23:20, नीतिवचन 23:23, नीतिवचन 23:26, नीतिवचन 23:28, नीतिवचन 23:29–30, नीतिवचन 23:33, नीतिवचन 23:35, नीतिवचन 24:1, नीतिवचन 24:3, नीतिवचन 24:5, नीतिवचन 24:8, नीतिवचन 24:10, नीतिवचन 24:12, नीतिवचन 24:15, नीतिवचन 24:17–18, नीतिवचन 24:20, नीतिवचन 24:21, नीतिवचन 24:24, नीतिवचन 24:26, नीतिवचन 24:29, नीतिवचन 24:30–31, नीतिवचन 24:34, नीतिवचन 25:1, नीतिवचन 25:2, नीतिवचन 25:5, नीतिवचन 25:7, नीतिवचन 25:7–8, नीतिवचन 25:13, नीतिवचन 25:15, नीतिवचन 25:17, नीतिवचन 25:19, नीतिवचन 25:21, नीतिवचन 25:22, नीतिवचन 26:2, नीतिवचन26:4, नीतिवचन26:6, नीतिवचन26:10, नीतिवचन26:11, नीतिवचन26:14, नीतिवचन26:16, नीतिवचन26:19, नीतिवचन 26:21, नीतिवचन 26:24, नीतिवचन 26:27, नीतिवचन 26:28, नीतिवचन 27:1, नीतिवचन 27:3, नीतिवचन 27:6, नीतिवचन27:7, नीतिवचन27:10, नीतिवचन27:12, नीतिवचन27:14, नीतिवचन27:15–16, नीतिवचन27:17, नीतिवचन27:20, नीतिवचन 27:22, नीतिवचन 27:24, नीतिवचन 27:26, नीतिवचन 28:1, नीतिवचन 28:4, नीतिवचन 28:6, नीतिवचन 28:8, नीतिवचन 28:10, नीतिवचन 28:12, नीतिवचन 28:13, नीतिवचन 28:16, नीतिवचन 28:17, नीतिवचन 28:19, नीतिवचन 28:22, नीतिवचन 28:25, नीतिवचन 28:27, नीतिवचन 29:1, नीतिवचन 29:3, नीतिवचन 29:6, नीतिवचन 29:8, नीतिवचन 29:10, नीतिवचन 29:11, नीतिवचन 29:14, नीतिवचन 29:17, नीतिवचन 29:18, नीतिवचन 29:20, नीतिवचन 29:23, नीतिवचन 29:25, नीतिवचन 29:27, नीतिवचन 30:1, नीतिवचन 30:3, नीतिवचन 30:6, नीतिवचन 30:8, नीतिवचन 30:9, नीतिवचन 30:11–12, नीतिवचन 30:14, नीतिवचन 30:15–16, नीतिवचन 30:19, नीतिवचन 30:22, नीतिवचन 30:27, नीतिवचन 30:30, नीतिवचन 30:32, नीतिवचन30:33, नीतिवचन31:1, नीतिवचन31:3, नीतिवचन31:5, नीतिवचन31:7, नीतिवचन31:9, नीतिवचन31:10, नीतिवचन31:12, नीतिवचन31:15, नीतिवचन31:17, नीतिवचन31:20, नीतिवचन31:23, नीतिवचन31:26, नीतिवचन31:28, नीतिवचन31:30

नीतिवचन 1:1

इस नीतिवचन के लेखक कौन थे?

इस्राएल के राजा सुलैमान इस नीतिवचन के लेखक थे।

नीतिवचन 1:3

यह नीतिवचन लोगों को जीवन निर्वाह करने में कैसे समझ देता है?

यह नीतिवचन लोगों को यह समझ देता है कि वे धर्म, न्याय और निष्पक्षता के विषय अनुशासन प्राप्त कर जीवन निर्वाह करें।

नीतिवचन 1:5

इन नीतिवचन को सुनकर बुद्धिमान क्या प्राप्त कर सकते हैं?

बुद्धिमान इन नीतिवचन को सुनकर अपनी विद्या को बढ़ा सकते हैं।

नीतिवचन 1:7

बुद्धि का मूल क्या है?

यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है।

नीतिवचन 1:8

पुत्र को किसकी शिक्षा पर कान लगाना चाहिए?

पुत्र को अपने पिता और माता की शिक्षा पर कान लगाना चाहिए।

नीतिवचन 1:10

यदि पापी लोग पुत्र को फुसलाएँ तो उन्हें क्या करना चाहिए?

लोग उनको फुसलाते है, उनकी बात नहीं माननी चाहिए।

नीतिवचन 1:13

जो पाप करते हैं वे अपने घरों को किन वस्तुओं से भरने की योजना बनाते हैं?

जो पाप करते हैं, वे अपने घरों को लूट से भरने की योजना बनाते हैं।

नीतिवचन 1:16

जो पाप करते हैं वे क्या करने को फुर्ती करते हैं?

जो पाप करते हैं, वे हत्या करने को फुर्ती करते हैं।

नीतिवचन 1:19

लालच के कारण लोगों का क्या होता है?

लालच के कारण लोगों का प्राण नाश हो जाता है।

नीतिवचन 1:20–21

कौन सड़क में, चौकों में और नगर के फाटकों पर ऊँचे स्वर से बोलती है?

बुद्धि सड़क में, चौकों में और नगर के फाटकों पर ऊँचे स्वर से बोलती है।

नीतिवचन 1:24–25

जब बुद्धि ने उन्हें पुकारा, तब जिनको बुद्धि की कमी थी, उन्होंने क्या किया?

जब बुद्धि ने उन्हें पुकारा, तब जिनको बुद्धि की कमी थी, उन्होंने सुनने से इन्कार किया और ध्यान नहीं दिया।

नीतिवचन 1:26

जब मूर्खों पर विपत्ति आएगी, तब बुद्धि क्या करेगी??

जब मूर्खों पर विपत्ति आएगी, तब बुद्धि उस समय हँसेगी।

नीतिवचन 1:28

जब मूर्ख उसे पुकारेंगे, तब बुद्धि क्या करेगी?

जब मूर्ख उसे पुकारेंगे, तब बुद्धि नहीं सुनेगी ।

नीतिवचन 1:31

मूर्ख किससे अघा जाएँगे?

मूर्ख अपनी युक्तियों के फल से अघा जाएँगे।

नीतिवचन 1:33

जो बुद्धि को सुनते हैं, वे कैसे रहेंगे?

जो बुद्धि को सुनते हैं, वे निडर बसे रहेंगे।

नीतिवचन 2:1

पिता अपने पुत्र से क्या चाहते हैं कि वह अपने हृदय में रख छोड़े?

पिता चाहते है कि उनकी आज्ञाओं को पुत्र अपने हृदय में रख छोड़े।

नीतिवचन 2:3–4

पुत्र समझ को कैसे ढूँढ़ना और खोजना चाहिए?

पुत्र समझ को चाँदी के समान ढूँढ़ना चाहिए, और गुप्त धन के समान उसकी खोज में लगे रहना चाहिए।

नीतिवचन 2:5

यदि पुत्र समझ को ढूँढ़े और खोजे, तो उन्हें क्या प्राप्त होगा?

पुत्र को परमेश्वर का ज्ञान प्राप्त होगा।

नीतिवचन 2:7

जो खराई से चलते हैं, उनके लिये यहोवा क्या हैं?

जो खराई से चलते हैं, उनके लिये यहोवा ढाल ठहरते हैं।

नीतिवचन 2:9

जब बुद्धि पुत्र के हृदय में प्रवेश करेगी, तब वे क्या समझ सकेंगे?

पुत्र धर्म और न्याय और सिधाई को, अर्थात् सब भली-भली चाल को समझ सकेंगे।

नीतिवचन 2:11–13

विवेक और समझ पुत्र को किससे बचाएंगे?

विवेक और समझ पुत्र को बुराई के मार्ग से और अंधेरे मार्ग पर चलनेवालों से बचाएंगे।

नीतिवचन 2:15

जो अंधेरे मार्ग में चलते हैं वे अपने मार्ग कैसे छिपाते हैं?

जो अंधेरे मार्ग में चलते हैं वे अपने मार्ग कुटिलता से छिपाते हैं।

नीतिवचन 2:17

चिकनी चुपड़ी बातें बोलनेवाली क्या छोड़ देती है और क्या भूल जाती है?

चिकनी चुपड़ी बातें बोलनेवाली अपनी जवानी के साथी को छोड़ देती, और अपने परमेश्वर की वाचा को भूल जाती है।

नीतिवचन 2:18

चिकनी चुपड़ी बातें बोलनेवाली की डगरें कहाँ पहुँचाती हैं?

चिकनी चुपड़ी बातें बोलनेवाली की डगरें मरे हुओं के बीच पहुँचाती हैं।

नीतिवचन 2:20

पुत्र को किसके मार्ग पर चलना चाहिए?

पुत्र को भले मनुष्यों और धर्मियों के मार्ग पर चलना चाहिए।

नीतिवचन 2:21

धर्मी लोगों के साथ क्या होगा?

धर्मी लोग देश में बसे रहेंगे।

नीतिवचन 2:22

दुष्ट लोगों के साथ क्या होगा?

दुष्ट लोग देश में से नाश होंगे।

नीतिवचन 3:1–2

पिता के शिक्षा और आज्ञाएँ उनके पुत्र में क्या बढ़ाएँगी?

पिता के शिक्षा और आज्ञाएँ उनके पुत्र में आयु और कुशलता को बढ़ाएँगी।

नीतिवचन 3:3

कृपा और सच्चाई कहाँ लिखी जानी चाहिए?

कृपा और सच्चाई हृदयरूपी पटिया पर लिखी जानी चाहिए।

नीतिवचन 3:5

पुत्र को किसका सहारा नहीं लेना चाहिए?

पुत्र को अपनी समझ का सहारा (पर भरोसा) नहीं लेना चाहिए।

नीतिवचन 3:7

पुत्र को अपनी दृष्टि में कैसे नहीं होना चाहिए?

पुत्र को अपनी दृष्टि में बुद्धिमान नहीं होना चाहिए।

नीतिवचन 3:9

पुत्र को अपनी सम्पत्ति के द्वारा क्या करना चाहिए?

पुत्र को अपनी सम्पत्ति के द्वारा यहोवा की प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

नीतिवचन 3:12

यहोवा किन्हें डाँटते हैं?

यहोवा जिनसे प्रेम रखते हैं उनको डाँटते हैं।

नीतिवचन 3:14

बुद्धि किससे उत्तम है?

बुद्धि चाँदी और सोने से उत्तम है।

नीतिवचन 3:17

बुद्धि के सब मार्ग किसके हैं?

बुद्धि के सब मार्ग कुशल के हैं।

नीतिवचन 3:19

यहोवा ने बुद्धि से क्या किया?

यहोवा ने बुद्धि से पृथ्वी की नींव डाली।

नीतिवचन 3:21–22

पुत्र को किससे जीवन मिलेगा?

खरी बुद्धि और विवेक से पुत्र को जीवन मिलेगा।

नीतिवचन 3:24

यदि पुत्र बुद्धि से चले, तब उनके लेटने से क्या होगा?

जब वे लेटेंगे, तब वे न भय खाएँगे और सुख की नींद आएगी।

नीतिवचन 3:25

पुत्र को किससे नहीं डरना चाहिए?

पुत्र को अचानक आनेवाले भय या विपत्ति से नहीं डरना चाहिए।

नीतिवचन 3:27

पुत्र को उन लोगों के लिये क्या करना चाहिए जो भलाई के योग्य हैं?

पुत्र को जो भलाई के योग्य है उनका भला अवश्य करना चाहिए।

नीतिवचन 3:29

पुत्र को अपने पड़ोसी के साथ क्या नहीं करना चाहिए?

पुत्र को अपने पड़ोसी के विरुद्ध बुरी युक्ति नहीं बाँधनी चाहिए ।

नीतिवचन 3:32

यहोवा के लिये दुष्ट कौन हैं?

यहोवा के लिये कुटिल मनुष्य दुष्ट है।

नीतिवचन 3:34

यहोवा ठट्ठा करनेवालों के साथ क्या करते हैं?

यहोवा ठट्ठा करनेवालों का ठट्ठा करते हैं।

नीतिवचन 3:35

बुद्धिमान क्या पाएँगे?

बुद्धिमान महिमा को पाएँगे।

नीतिवचन 4:1–2

पुत्रों को क्या नहीं भूलना चाहिए?

पुत्रों को अपने पिता की शिक्षा नहीं भूलना चाहिए।

नीतिवचन 4:4

पिता ने पुत्र से कैसे कहा कि वह जीवित रहेंगे?

पिता ने पुत्र से कहा कि वह पिता की आज्ञाओं का पालन करके जीवित रहेंगे।

नीतिवचन 4:6

यदि पुत्र बुद्धि को छोड़ते नहीं हैं, बल्कि प्रीति रखते हैं, तो बुद्धि उनके लिये क्या करेगी?

बुद्धि उनकी रक्षा करेगी और उन्हें पहरा देगी।

नीतिवचन 4:8–9

यदि पुत्र बुद्धि की बड़ाई और उससे लिपट जाए, तो बुद्धि उनके लिये क्या करेगी?

बुद्धि उन्हें बढ़ाएगी, उनकी महिमा करेगी, उनके सिर पर शोभायमान आभूषण बाँधेगी, और उन्हें सुन्दर मुकुट देगी।

नीतिवचन 4:11

पिता ने अपने पुत्र को किस पथ पर चलाया हैं?

पिता ने अपने पुत्र को सिधाई के पथ पर चलाया हैं।

नीतिवचन 4:13

पुत्र को किसे पकड़े रहना चाहिए, क्योंकि वही उनका जीवन है?

पुत्र को शिक्षा को पकड़े रहना चाहिए, क्योंकि वहीं उनका जीवन है।

नीतिवचन 4:14–15

पुत्र को किस डगर को छोड़ना चाहिए?

पुत्र को दुष्टों की डगर को छोड़ना चाहिए।

नीतिवचन 4:16

दुष्टों को नींद आने से पहले क्या करना चाहिए?

दुष्टों को नींद आने से पहले बुराई करनी चाहिए।

नीतिवचन 4:18

धर्मियों की चाल किसके समान होती है?

धर्मियों की चाल भोर-प्रकाश के समान होती है।

नीतिवचन 4:19

दुष्टों का मार्ग कैसा होता है?

दुष्टों का मार्ग घोर अंधकारमय होता है।

नीतिवचन 4:23

पुत्र को सबसे अधिक अपने मन की रक्षा क्यों करनी चाहिए?

पुत्र को सबसे अधिक अपने मन की रक्षा करनी चाहिए क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।

नीतिवचन 4:24

पुत्र को किस प्रकार अपने मुँह से बोलने और बातें कहने से दूर रहना चाहिए?

पुत्र को टेढ़ी बात अपने मुँह से बोलने और चालबाजी की बातें कहने से दूर रहना चाहिए।

नीतिवचन 4:25

पुत्र को अपनी पलकें कहाँ की ओर खुली रखनी चाहिए?

पुत्र को अपनी पलकें आगे की ओर खुली रखनी चाहिए।

नीतिवचन 5:1

यदि पुत्र समझ की ओर कान लगाए तो वह क्या सीखेगा?

यदि पुत्र समझ की ओर कान लगाए, तो उससे उनका विवेक सुरक्षित बना रहेगा।

नीतिवचन 5:4

पराई स्त्री का परिणाम किसके समान होता है?

पराई स्त्री का परिणाम नागदौना के समान कड़वा होता है।

नीतिवचन 5:5

पराई स्त्री के पाँव कहाँ की ओर बढ़ते हैं?

पराई स्त्री के पाँव मृत्यु की ओर बढ़ते हैं, और अधोलोक तक पहुँचते हैं।

नीतिवचन 5:8

पराई स्त्री और उसके घर के सम्बन्ध में बुद्धिमान पुत्रों को कौनसा मार्ग लेना चाहिए?

बुद्धिमान पुत्रों को ऐसी स्त्री से दूर ही रहना चाहिए और उसकी डेवढ़ी के पास भी नहीं जाना चाहिए।

नीतिवचन 5:9

यदि पुत्र पराई स्त्री के साथ सम्बन्ध रखते हैं तो वे क्या देंगे?

यदि पुत्र पराई स्त्री के साथ सम्बन्ध रखते हैं, तो वे अपना यश औरों के हाथ, और अपना जीवन क्रूर जन के वश में कर देंगे।

नीतिवचन 5:11

यदि पुत्र पराई स्त्री के साथ सम्बन्ध रखता हैं तो उनके अन्तिम समय में क्या होगा?

यदि वे पराई स्त्री के साथ सम्बन्ध रखता हैं, तो उसके शरीर का बल खत्म हो जाएगा।

नीतिवचन 5:12

यदि पुत्र का पराई स्त्री के साथ सम्बन्ध हो जाएँ, तो वे अपने अन्तिम समय में किस बात पर पछताएँगे?

यदि उनका पराई स्त्री के साथ सम्बन्ध हो जाएँ, तो वे अपने अन्तिम समय में कहेंगे कि वे शिक्षा से बैर करने और डाँटनेवाले का तिरस्कार करने पर पछता रहे हैं।

नीतिवचन 5:15

पुत्रों को कहाँ से पीना चाहिए?

पुत्रों को अपने ही कुण्ड से पानी, और अपने ही कुएँ के सोते का जल पीना चाहिए।

नीतिवचन 5:18

पुत्रों को किनके साथ आनन्दित रहना चाहिए?

पुत्रों को अपनी जवानी की पत्नी के साथ आनन्दित रहना चाहिए।

नीतिवचन 5:19

पुत्रों को किससे मोहित किया जाना चाहिए?

पुत्रों को जवानी की पत्नी के प्रेम से मोहित किया जाना चाहिए।

नीतिवचन 5:21

यहोवा की दृष्टि से क्या छिपे नहीं हैं?

यहोवा की दृष्टि से मनुष्य के मार्ग छिपे नहीं है।

नीतिवचन 5:22

दुष्ट किससे फँसेगा और किसके बन्धनों में बन्धा रहेगा?

दुष्ट का पाप उसको फँसाएगा और बन्धनों में बन्धा रखेगा।

नीतिवचन 6:1–2

पुत्र अपने आपको कैसे फँसा सकता है?

पुत्र अपने ही शपथ के वचनों में फँस सकता है जब वह परदेशी के लिये शपथ खाकर उत्तरदायी हो।

नीतिवचन 6:3

पुत्र को अपने आप को बचाने के लिये क्या करना चाहिए?

अपने आप को बचाने के लिये पुत्र को अपने पड़ोसी के पास जाकर अपनी रिहाई के लिए साष्टांग प्रणाम करके उससे विनती करनी होगी।

नीतिवचन 6:6

आलसी को क्या ध्यान देना चाहिए?

एक आलसी को चींटियों पर ध्यान देना चाहिए।

नीतिवचन 6:8

चींटियाँ धूपकाल में क्या करती है?

चींटियाँ धूपकाल में अपना आहार संचय करती हैं और अपनी भोजनवस्तु बटोरती हैं।

नीतिवचन 6:11

जो आलसी अपनी झपकी से नहीं उठेगा, उसके साथ क्या होगा?

जो आलसी अपनी झपकी से नहीं उठेगा, उस पर कंगालपन आ जाएगा।

नीतिवचन 6:12

अनर्थकारी क्या बकता फिरता है?

अनर्थकारी टेढ़ी-टेढ़ी बातें बकता फिरता है।

नीतिवचन 6:15

दुष्ट के बुराई गढ़ने के कारण उसके साथ क्या होगा?

दुष्ट पर विपत्ति अचानक आ पड़ेगी।

नीतिवचन 6:16

यहोवा कितनी वस्तुओं से बैर करते हैं और कितनी वस्तुओं से उनको घृणा हैं?

छः वस्तुओं से यहोवा बैर करते हैं, और सात हैं जिनसे उनको घृणा हैं।

नीतिवचन 6:18

यहोवा किस प्रकार के पाँव से बैर करते हैं?

यहोवा बुराई करने को वेग से दौड़नेवाले पाँव से बैर करते हैं।

नीतिवचन 6:19

यहोवा किस प्रकार के साक्षी से बैर करते हैं?

यहोवा झूठ बोलनेवाला साक्षी से बैर करते हैं।

नीतिवचन 6:23

"आज्ञा" और "शिक्षा" किसके समान ठहराए गए हैं?

आज्ञा दीपक के समान ठहराई गई है और शिक्षा ज्योति के समान ठहराई गई है।

नीतिवचन 6:26

व्यभिचारिणी पुत्र का क्या अहेर कर लेती है?

व्यभिचारिणी पुत्र का अनमोल जीवन अहेर कर लेती है।

नीतिवचन 6:30

यदि चोर चोरी करे, तो लोग उसे तुच्छ क्यों नहीं जानते?

यदि चोर भूख के मारे अपना पेट भरने के लिये चोरी करे, तो लोग उसे तुच्छ नहीं जानते।

नीतिवचन 6:32

परस्त्रीगमन करनेवाला किसे नाश करता है?

परस्त्रीगमन करनेवाला अपने प्राण को नाश करता है।

नीतिवचन 6:35

परस्त्रीगमन का बदला लेनेवाला क्या नहीं लेगा?

परस्त्रीगमन का बदला लेनेवाला मुआवजे में कुछ नहीं लेगा।

नीतिवचन 7:1–2

पुत्र को जीवित रहने के लिये क्या मानना और रखना चाहिए?

पुत्र को अपने पिता की आज्ञाओं और शिक्षा का मानना और रखना चाहिए।

नीतिवचन 7:4–5

बुद्धि और समझ पुत्र को किनसे बचाती हैं?

बुद्धि और समझ पुत्र को पराई स्त्री से बचाती हैं।

नीतिवचन 7:6–7

जब सुलैमान ने झरोखे से झाँका, तो उन्होंने क्या देखा?

सुलैमान ने भोले लोगों में से एक निर्बुद्धि जवान को देखा।

नीतिवचन 7:10

जिस स्त्री से जवान मिला, उसका भेष कैसा था?

स्त्री का भेष वेश्या के समान था।

नीतिवचन 7:12

स्त्री एक-एक कोने पर क्या करती है?

स्त्री एक-एक कोने पर बाट जोहती है।

नीतिवचन 7:14

स्त्री ने दिन में पहले क्या किया था?

स्त्री ने दिन में पहले मेलबलि चढ़ाया था।

.

नीतिवचन 7:15

स्त्री क्या खोज रही थी?

स्त्री जवान के दर्शन की खोजी थी।

नीतिवचन 7:16–18

स्त्री जवान को क्या करने के लिये नेवता दे रही है?

स्त्री जवान को भोर तक अपने बिछौने पर चलने के लिये नेवता दे रही है।

नीतिवचन 7:19

स्त्री का पति कहाँ है?

स्त्री का पति दूर देश को चला गया है।

नीतिवचन 7:22

जवान स्त्री के पीछे कैसे हो लिया?

जवान स्त्री के पीछे ऐसे हो लिया जैसे बैल कसाई-खाने को, या हिरन फंदे में कदम रखता है।

नीतिवचन 7:23

जवान के कामों से उसके क्या जाएँगे?

जवान के कामों से उसके प्राण जाएँगे।

नीतिवचन 7:25

जवान को उस स्त्री के विषय में कौन सी बुद्धि की शिक्षा दी गई है?

जवान को बुद्धि की शिक्षा दी गई है कि वे उसकी डगरों में भूलकर भी न जाए।

नीतिवचन 7:27

स्त्री का घर किसका मार्ग है?

स्त्री का घर अधोलोक का मार्ग है।

नीतिवचन 8:1–3

फाटकों के पास नगर के पैठाव में कौन ऊँचे स्वर से कहती है?

बुद्धि नगर के द्वारों पर ऊँचे स्वर से कहती है।

नीतिवचन 8:4

बुद्धि किसे पुकारती है?

बुद्धि सब मनुष्यों को पुकारती है।

नीतिवचन 8:6–7

बुद्धि किस प्रकार की बातें कहती है?

बुद्धि उत्तम बातें और सच्चाई की बातें कहती है।

नीतिवचन 8:11

बुद्धि किससे अधिक अनमोल होती है?

बुद्धि बहुमूल्य रत्नों से भी अधिक अनमोल होती है।

नीतिवचन 8:13

यहोवा का भय माननेवाले किससे बैर रखते हैं?

जो यहोवा का भय मानते हैं, वे बुराई, घमण्ड, अहंकार, और उलट-फेर की बातों से बैर रखते हैं।

नीतिवचन 8:15–16

जिन राजाओं और हाकिम के पास बुद्धि होती है, वे कैसे शासन करते हैं?

जिन राजाओं और हाकिम के पास बुद्धि होती है, वे धर्म से शासन करते हैं।

नीतिवचन 8:19

बुद्धि का फल किससे उत्तम है?

बुद्धि का फल सोने और चाँदी से उत्तम है।

नीतिवचन 8:21

बुद्धि अपने प्रेमियों को क्या देगी?

बुद्धि अपने प्रेमियों को धन-सम्पत्ति का भागी देगी।

नीतिवचन 8:23

बुद्धि कब ठहराई गई थी?

बुद्धि सदा से वरन् आदि ही से ठहराई गई थी।

नीतिवचन 8:26–27

जब यहोवा ने पृथ्वी और आकाश को बनाया, तब बुद्धि कहाँ थी?

जब यहोवा ने पृथ्वी और आकाश को बनाया, तब बुद्धि वहाँ थी।

नीतिवचन 8:30

जब यहोवा ने सब कुछ बनाया तब बुद्धि यहोवा के पास क्या कर रही थी?

जब यहोवा ने सब कुछ बनाया, तब बुद्धि प्रधान कारीगर के समान यहोवा के पास थी।

नीतिवचन 8:31

बुद्धि का सुख क्या था?

बुद्धि का सुख मनुष्यों की संगति थी।

नीतिवचन 8:35

जो बुद्धि पाता है, वह और क्या पाता है?

जो बुद्धि पाता है, वह जीवन और यहोवा की प्रसन्नता को पाता है।

नीतिवचन 8:36

जो बुद्धि को ढूँढ़ने में विफल होता है, वह क्या पाता है?

जो बुद्धि को ढूँढ़ने में विफल होता है, वह मृत्यु को पाता है।

नीतिवचन 9:1

बुद्धि ने क्या बनाया?

बुद्धि ने अपना घर बनाया।

नीतिवचन 9:3–4

बुद्धि के भेजे हुए निमंत्रण किसके लिये है?

बुद्धि जो निमंत्रण भेजती है, वह भोले और जो निर्बुद्धि है उनके लिये है।

नीतिवचन 9:6

बुद्धि कहती है कि भोले को क्या छोड़ देना चाहिए?

बुद्धि कहती है कि भोले को मूर्खों का साथ छोड़ देना चाहिए।

नीतिवचन 9:7–8

जो ठट्ठा करनेवाले को डाँटता है, उसका क्या होता है?

जो ठट्ठा करनेवाले को डाँटता है, उसका अपमान होगा और वह कलंकित होगा और बैर किया जाएगा।

नीतिवचन 9:8

जो बुद्धिमान को शिक्षा देता है, उसका क्या होता है?

जो बुद्धिमान को शिक्षा देता है, उससे प्रेम किया जाता है।

नीतिवचन 9:10

बुद्धि का आरम्भ क्या है?

यहोवा का भय मानना बुद्धि का आरम्भ है।

नीतिवचन 9:10 (#2)

समझ क्या है?

परमपवित्र परमेश्वर को जानना ही समझ है।

नीतिवचन 9:13

मूर्ख स्त्री की विशेषताएँ क्या हैं?

मूर्ख स्त्री बक-बक करती है, निर्बुद्धि होती है, और कुछ नहीं जानती।

नीतिवचन 9:17

चोरी और लुके-छिपे की वस्तुएँ आरम्भ में उसे पाने वाले के लिये कैसी हो सकती हैं?

चोरी और लुके-छिपे की वस्तुएँ आरम्भ में उसे पाने वाले के लिये मीठी और अच्छी लग सकती है।

नीतिवचन 9:18

मूर्ख स्त्री के घर में कौन हैं?

स्त्री के घर में मरे हुए अधोलोक के निचले स्थानों में है।

नीतिवचन 10:1

बुद्धिमान सन्तान से पिता का क्या होता हैं?

बुद्धिमान सन्तान से पिता आनन्दित होता है।

नीतिवचन 10:3

यहोवा दुष्टों की अभिलाषा का क्या करते हैं?

यहोवा दुष्टों की अभिलाषा को पूरी नहीं होने देते हैं।

नीतिवचन 10:4

जो काम में ढिलाई करता है, उनका क्या होता है?

जो काम में ढिलाई करता है, वह निर्धन हो जाता है।

नीतिवचन 10:6

धर्मी को परमेश्वर से क्या मिलता है?

धर्मी को परमेश्वर से आशीर्वाद मिलता है।

नीतिवचन 10:8

बकवादी मूर्ख का क्या होता है?

बकवादी मूर्ख का नाश होता है।

नीतिवचन 10:12

प्रेम से क्या ढँप जाता है?

प्रेम से सब अपराध ढँप जाते हैं।

नीतिवचन 10:13

समझवालों के वचनों में क्या पाई जाती है?

समझवालों के वचनों में बुद्धि पाई जाती है।

नीतिवचन 10:17

जो डाँट से मुँह मोड़ता है, उसके साथ क्या होता है?

जो डाँट से मुँह मोड़ता है, वह भटक जाता है।

नीतिवचन 10:19

जहाँ बहुत बातें होती हैं, वहाँ क्या होता है?

जहाँ बहुत बातें होती हैं, वहाँ अपराध (पाप) भी होता है।

नीतिवचन 10:22

यहोवा की आशीष से क्या मिलता है?

यहोवा की आशीष से धन मिलता है।

नीतिवचन 10:25

दुष्ट जन किसके समान है?

दुष्ट जन उस बवण्डर के समान है, जो गुजरते ही लोप हो जाता है।

नीतिवचन 10:26

आँख को धुआँ किसको लगता है?

आलसी अपने भेजनेवालों के आँख को धुआँ लगता है।

नीतिवचन 10:27

दुष्टों का जीवन कैसे होता है?

दुष्टों का जीवन थोड़े ही दिनों का होता है।

नीतिवचन 10:29

यहोवा किसका गढ़ ठहरते हैं?

यहोवा खरे मनुष्य का गढ़ ठहरते हैं।

नीतिवचन 10:31

धर्मी के मुँह से क्या टपकती है?

धर्मी के मुँह से बुद्धि टपकती है।

नीतिवचन 11:2

अपमान से पहले क्या होता है?

अपमान से पहले अभिमान होता है।

नीतिवचन 11:4

कोप के दिन क्या अनमोल होता है?

कोप के दिन धर्म अनमोल होता है।

नीतिवचन 11:6

विश्वासघाती लोग (दुष्ट) किसमें फँसते हैं?

विश्वासघाती लोग अपनी ही दुष्टता में फँसते हैं।

नीतिवचन 11:8

कौन विपत्ति से छूट जाता है?

धर्मी विपत्ति से छूट जाता है।

नीतिवचन 11:9

भक्तिहीन जन अपने पड़ोसी को कैसे बिगाड़ता है?

भक्तिहीन जन अपने पड़ोसी को अपने मुँह की बात से बिगाड़ता है।

नीतिवचन 11:13

विश्वासयोग्य मनुष्य चुगली करने के बदले क्या करते हैं?

विश्वासयोग्य मनुष्य चुगली करने के बदले बात को छिपा कर रखते हैं।

नीतिवचन 11:15

किसी व्यक्ति को परदेशी के लिये क्या नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे वह बड़ा दुःख उठा सकता है?

किसी व्यक्ति को परदेशी का उत्तरदायी नहीं होना चाहिए।

नीतिवचन 11:18

दुष्ट अपनी कमाई कैसे कमाता है?

दुष्ट मिथ्या से कमाई कमाता है।

नीतिवचन 11:20

यहोवा किनसे प्रसन्न रहते हैं?

यहोवा खरी चालवालों से प्रसन्न रहते हैं।

नीतिवचन 11:21

किस बात को सब लोग निश्चय जान सकते हैं?

सब लोग इस बात को निश्चय जान सकते है कि बुरा मनुष्य निर्दोष न ठहरेगा।

नीतिवचन 11:24

जो छितरा देते हैं उनका क्या होता है?

जो छितरा देते हैं, उनकी बढ़ती ही होती है।

नीतिवचन 11:25

जो औरों की खेती सींचता है, उसे क्या मिलेगा?

जो औरों की खेती सींचता है, उसकी भी सींची जाएगी।

नीतिवचन 11:28

उसका क्या होगा, जो अपने धन पर भरोसा रखता है?

जो अपने धन पर भरोसा रखता है वह सूखे पत्ते के समान गिर जाता है।

नीतिवचन 11:30

जीवन के वृक्ष के समान क्या हैं?

धर्मी का प्रतिफल जीवन के वृक्ष के समान हैं।

नीतिवचन 11:31

किन्हें फल मिलेगा?

धर्मी को पृथ्वी पर फल मिलेगा, तो निश्चय है दुष्ट और पापी को भी मिलेगा।

नीतिवचन 12:1

मूर्ख किससे बैर रखता है?

मूर्ख डाँट से बैर रखता है।

नीतिवचन 12:2

यहोवा किसे दोषी ठहराते हैं?

यहोवा बुरी युक्ति करनेवाले को दोषी ठहराते हैं।

नीतिवचन 12:4

पति का मुकुट कौन है?

भली स्त्री अपने पति का मुकुट है।

नीतिवचन 12:5

दुष्ट किस प्रकार की युक्तियाँ देता है?

दुष्ट छल की युक्तियाँ देता है।

नीतिवचन 12:7

धर्मियों के घर का क्या होता है?

धर्मियों का घर स्थिर रहता है।

नीतिवचन 12:10

कौन अपने पशु के भी प्राण की सुधि रखते हैं?

धर्मी अपने पशु के भी प्राण की सुधि रखते हैं।

नीतिवचन 12:13

बुरा मनुष्य किसके कारण फंदे में फँसता है?

बुरा मनुष्य अपने दुर्वचनों के कारण फंदे में फँसता है।

नीतिवचन 12:15

मूर्ख को अपनी ही चाल कैसी जान पड़ती है?

मूर्ख को अपनी ही चाल सीधी जान पड़ती है।

नीतिवचन 12:18

बिना सोच विचार का बोलना किसके समान है?

बिना सोच विचार का बोलना तलवार के समान चुभता है।

नीतिवचन 12:20

बुरी युक्ति करनेवालों के मन में क्या रहता है?

बुरी युक्ति करनेवालों के मन में छल रहता है।

नीतिवचन 12:22

यहोवा को किनसे से घृणा आती है?

यहोवा को झूठों से घृणा आती है।

नीतिवचन 12:24

आलसी किसमें पकड़े जाते हैं?

आलसी बेगार में पकड़े जाते हैं।

नीतिवचन 12:26

दुष्ट लोग अपनी ही चाल के कारण क्या हो जाते हैं?

दुष्ट लोग अपनी ही चाल के कारण भटक जाते हैं।

नीतिवचन 12:28

धर्म के मार्ग में क्या मिलता है?

धर्म के मार्ग में जीवन मिलता है।

नीतिवचन 13:1

बुद्धिमान पुत्र क्या सुनता है?

बुद्धिमान पुत्र पिता की शिक्षा सुनता है।

नीतिवचन 13:3

मनुष्य अपने प्राण की रक्षा कैसे करता है?

अपने मुँह की चौकसी करके मनुष्य अपने प्राण की रक्षा करता है।

नीतिवचन 13:4

कौन लालसा तो करता है, परन्तु उसको कुछ नहीं मिलता?

आलसी का प्राण लालसा तो करता है, परन्तु उसको कुछ नहीं मिलता।

नीतिवचन 13:7

ऐसा कौन है जिसके पास बहुत धन रहता है?

जो धन उड़ा देता, उसके पास बहुत धन रहता है।

नीतिवचन 13:8

निर्धन किस प्रकार की घुड़की को सुनता नहीं है?

निर्धन कभी छुड़ौती की घुड़की को सुनता नहीं है।

नीतिवचन 13:10

अहंकार से क्या होते हैं?

अहंकार से केवल झगड़े होते हैं।

नीतिवचन 13:11

धन जल्दी कैसे घटता है?

धोखे से कमाया धन जल्दी घटता है।

नीतिवचन 13:14

जीवन का सोता क्या है?

बुद्धिमान की शिक्षा जीवन का सोता है।

नीतिवचन 13:16

विवेकी मनुष्य किससे सब काम करता हैं?

विवेकी मनुष्य ज्ञान से सब काम करता हैं।

नीतिवचन 13:18

जो डाँट को मानते हैं, उनकी क्या होती हैं?

जो डाँट को मानते हैं, उनकी महिमा होती हैं।

नीतिवचन 13:20

बुद्धिमान होने के लिये मनुष्य को किसकी संगति करनी चाहिए?

बुद्धिमान होने के लिये मनुष्य को बुद्धिमानों की संगति करनी चाहिए।

नीतिवचन 13:22

पापी की सम्पत्ति किसके लिये रखी जाती है?

पापी की सम्पत्ति धर्मी के लिये रखी जाती है।

नीतिवचन 13:24

माता-पिता अपने बच्चे से प्रेम कैसे करते हैं?

माता-पिता अपने बच्चे से प्रेम यत्न से उनको शिक्षा देकर करते हैं।

नीतिवचन 13:25

दुष्ट का पेट किस दशा में होता है?

दुष्ट भूखे ही रहते हैं।

नीतिवचन 14:1

बुद्धिमान स्त्री क्या करती है?

बुद्धिमान स्त्री अपने घर को बनाती है।

नीतिवचन 14:2

कौन यहोवा को तुच्छ जाननेवाला ठहरता है?

जो टेढ़ी चाल चलता वह यहोवा को तुच्छ जाननेवाला ठहरता है।

नीतिवचन 14:5

सच्चा साक्षी क्या नहीं करते हैं?

सच्चा साक्षी झूठ नहीं बोलते हैं।

नीतिवचन 14:7

मूर्ख की बात में क्या नहीं पाओगे?

मूर्ख से ज्ञान की बात नहीं पाओगे।

नीतिवचन 14:11

दुष्टों के घर का क्या हो जाता है?

दुष्टों के घर का विनाश हो जाता है।

नीतिवचन 14:11 (#2)

सीधे लोगों के तम्बू में क्या होती है?

सीधे लोगों के तम्बू में बढ़ती होती है।

नीतिवचन 14:14

जो बेईमान है, वह किसका फल भोगता है?

जो बेईमान है, वह अपनी चाल चलन का फल भोगता है।

नीतिवचन 14:16

मूर्ख चेतावनी का क्या करता है?

मूर्ख ढीठ होकर चेतावनी की उपेक्षा करता है।

नीतिवचन 14:17

जो झट क्रोध करे, वह क्या करेगा?

जो झट क्रोध करे, वह मूर्खता का काम करेगा।

नीतिवचन 14:19

बुरे लोग किसके सम्मुख दण्डवत् करेंगे?

बुरे लोग भलों के सम्मुख दण्डवत् करेंगे।

नीतिवचन 14:22

भली युक्ति निकालनेवालों से क्या व्यवहार किया जाता है?

भली युक्ति निकालनेवालों से करुणा और सच्चाई का व्यवहार किया जाता है।

नीतिवचन 14:23

परिश्रम से सदा क्या होता है?

परिश्रम से सदा लाभ होता है।

नीतिवचन 14:27

जीवन का सोता क्या है?

यहोवा का भय मानना, जीवन का सोता है।

नीतिवचन 14:29

कौन मूर्खता को बढ़ाता है?

जो अधीर होता है, वह मूर्खता को बढ़ाता है।

नीतिवचन 14:31

कौन उसके कर्ता की निन्दा करता है?

जो कंगाल पर अंधेर करता, वह उसके कर्ता की निन्दा करता है।

नीतिवचन 14:34

जाति की बढ़ती किससे होती है?

जाति की बढ़ती धर्म ही से होती है।

नीतिवचन 15:1

जलजलाहट किससे ठण्डी होती है?

कोमल उत्तर सुनने से जलजलाहट ठण्डी होती है।

नीतिवचन 15:3

यहोवा की आँखें किसको देखती रहती हैं?

यहोवा की आँखें बुरे भले दोनों को देखती रहती हैं।

नीतिवचन 15:5

मूर्ख अपने पिता की शिक्षा का क्या करता है?

मूर्ख अपने पिता की शिक्षा का तिरस्कार करता है।

नीतिवचन 15:8

यहोवा किसके बलिदान से घृणा करते हैं?

यहोवा दुष्ट लोगों के बलिदान से घृणा करते हैं।

नीतिवचन 15:10

जो मार्ग को छोड़ देता है, उसको क्या मिलती है?

जो मार्ग को छोड़ देता है, उसको बड़ी ताड़ना मिलती है।

नीतिवचन 15:13

मुख पर प्रसन्नता किससे छा जाती है?

मन आनन्दित होने से मुख पर भी प्रसन्नता छा जाती है।

नीतिवचन 15:16

घबराहट के साथ बहुत रखे हुए धन से उत्तम क्या है?

घबराहट के साथ बहुत रखे हुए धन से, यहोवा के भय के साथ थोड़ा ही धन उत्तम है।

नीतिवचन 15:18

कौन मुकद्दमों को दबा देता है?

जो विलम्ब से क्रोध करनेवाला है, वह मुकद्दमों को दबा देता है।

नीतिवचन 15:20

बुद्धिमान पुत्र से पिता क्या होता है?

बुद्धिमान पुत्र से पिता आनन्दित होता है।

नीतिवचन 15:22

किसकी सम्मति से सफलता मिलती है?

बहुत से मंत्रियों की सम्मति से सफलता मिलती है।

नीतिवचन 15:25

यहोवा किसको ढा देते हैं?

यहोवा अहंकारियों के घर को ढा देते हैं।

नीतिवचन 15:28

धर्मी उत्तर देने से पहले क्या करते हैं?

धर्मी उत्तर देने से पहले मन में सोचते हैं।

नीतिवचन 15:31

जब कोई बुद्धिमान को डाँटता है, तब वह क्या करता है?

बुद्धिमान डाँट को कान लगाकर सुनता है।

नीतिवचन 15:33

महिमा से पहले क्या आती है?

महिमा से पहले नम्रता आती है।

नीतिवचन 16:2

मनुष्य का सारा चाल चलन अपनी दृष्टि में कैसे ठहरता है?

मनुष्य का सारा चाल चलन अपनी दृष्टि में पवित्र ठहरता है।

नीतिवचन 16:4

यहोवा ने सब वस्तुएँ किसके लिये बनाई हैं?

यहोवा ने सब वस्तुएँ विशेष उद्देश्य के लिये बनाई हैं।

नीतिवचन 16:6

अधर्म (पाप) का प्रायश्चित किससे होता है?

अधर्म (पाप) का प्रायश्चित कृपा, और सच्चाई से होता है।

नीतिवचन 16:9

जब मनुष्य अपने मार्ग पर विचार करता है, तब यहोवा क्या करते हैं?

जब मनुष्य अपने मार्ग पर विचार करता है, तब यहोवा उनके पैरों को स्थिर करते हैं।

नीतिवचन 16:12

गद्दी कैसे स्थिर रहती है?

गद्दी धर्म ही से स्थिर रहती है।

नीतिवचन 16:14

कौनसी बात मृत्यु के दूत के समान है?

राजा का क्रोध मृत्यु के दूत के समान है।

नीतिवचन 16:16

सोने और चाँदी से बढ़कर क्या योग्य है?

बुद्धि और समझ सोने और चाँदी से बढ़कर योग्य है।

नीतिवचन 16:18

ठोकर खाने से पहले क्या आता है?

ठोकर खाने से पहले घमण्ड आता है।

नीतिवचन 16:20

मनुष्य वचन से कल्याण कैसे पाता है?

मनुष्य वचन पर मन लगाने से कल्याण पाता है।

नीतिवचन 16:23

बुद्धिमान का मन उनके मुँह पर क्या प्रगट करता है?

बुद्धिमान का मन उनके मुँह पर बुद्धिमानी प्रगट करता है।

नीतिवचन 16:25

यद्यपि मार्ग मनुष्य को सीधा जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में क्या मिलती है?

यद्यपि मार्ग मनुष्य को सीधा जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।

नीतिवचन 16:28

परम मित्रों में कौन फूट करा देता है?

कानाफूसी करनेवाला परम मित्रों में फूट करा देता है।

नीतिवचन 16:30

आँख मूँदनेवाला क्या करता है?

आँख मूँदनेवाला छल की कल्पनाएँ करता है।

नीतिवचन 16:31

कौन सी बात शोभायमान मुकुट ठहरते हैं?

पक्के बाल शोभायमान मुकुट ठहरते हैं।

नीतिवचन 16:32

कौन नगर को जीत लेने से उत्तम है?

जो अपने मन को वश में रखता है, वह नगर को जीत लेने से उत्तम है।

नीतिवचन 16:33

चिट्ठी का निकलना किनसे होता है?

चिट्ठी का निकलना यहोवा ही की ओर से होता है।

नीतिवचन 17:2

बुद्धि से चलनेवाला दास अपने स्वामी के उस पुत्र पर जो लज्जा का कारण होता है, उस पर क्या करता है?

बुद्धि से चलनेवाला दास अपने स्वामी के उस पुत्र पर जो लज्जा का कारण होता है प्रभुता करता है।

नीतिवचन 17:4

झूठा मनुष्य किसकी ओर कान लगाता है?

झूठा मनुष्य दुष्टता की बात की ओर कान लगाता है।

नीतिवचन 17:5

जो किसी की विपत्ति पर हँसता है, उसके साथ क्या होगा?

जो किसी की विपत्ति पर हँसता है, वह निर्दोष नहीं ठहरेगा।

नीतिवचन 17:8

घूस को मोह लेनेवाला मणि क्यों समझा जाता है?

घूस को मोह लेनेवाला मणि समझा जाता है क्योंकि घूस देनेवाला पुरुष जिधर फिरता, उधर उसका काम सफल होता है।

नीतिवचन 17:10

कौनसी बात मूर्ख के मन में नहीं गड़ता?

सौ बार मार खाना भी मूर्ख के मन में नहीं गड़ता।

नीतिवचन 17:12

बच्चा-छीनी-हुई-रीछनी से मिलना किससे मिलने से बेहतर है?

बच्चा-छीनी-हुई-रीछनी से मिलना, मूर्खता में डूबे हुए मूर्ख से मिलने से बेहतर है।

नीतिवचन 17:14

झगड़ा बढ़ने से पहले मनुष्य को क्या करना चाहिए?

झगड़ा बढ़ने से पहले मनुष्य को उसे छोड़ देना उचित है।

नीतिवचन 17:15

यहोवा के लिये कौनसे लोग दोषी ठहरते है?

जो दोषी को निर्दोष, और जो निर्दोष को दोषी ठहराता है, वह यहोवा के लिये दोषी ठहरते है।

नीतिवचन 17:18

निर्बुद्धि मनुष्य क्या करता है?

निर्बुद्धि मनुष्य बाध्यकारी वायदे करता है, और अपने पड़ोसी के कर्ज का उत्तरदायी होता है।

नीतिवचन 17:20

किस कारण मनुष्य विपत्ति में पड़ता है?

उलट-फेर की बात के कारण मनुष्य विपत्ति में पड़ता है।

नीतिवचन 17:22

अच्छी औषधि क्या है?

मन का आनन्द अच्छी औषधि है।

नीतिवचन 17:25

मूर्ख पुत्र से पिता और उसकी जननी को क्या होता है?

मूर्ख पुत्र से पिता उदास होता है, और उसकी जननी को शोक होता है।

नीतिवचन 17:28

मूर्ख को बुद्धिमान कैसे गिना जाता है?

मूर्ख को बुद्धिमान गिना जाता है, यदि वह चुप रहता है।

नीतिवचन 18:2

मूर्ख का मन किसमें नहीं लगता

मूर्ख का मन समझ की बातों में नहीं लगता।

नीतिवचन 18:3

दुष्टता के साथ क्या आते हैं?

दुष्टता के साथ अपमान, निरादर और निन्दा आते हैं।

नीतिवचन 18:6

बात बढ़ाने से मूर्ख क्या खड़ा करता है?

बात बढ़ाने से मूर्ख मुकद्दमा खड़ा करता है।

नीतिवचन 18:8

स्वादिष्ट भोजन किसके समान लगते हैं?

कानाफूसी करनेवाले के वचन स्वादिष्ट भोजन के समान लगते हैं।

नीतिवचन 18:10

दृढ़ गढ़ क्या है?

यहोवा का नाम दृढ़ गढ़ है।

नीतिवचन 18:12

नाश होने से पहले मनुष्य के मन में क्या होता है?

नाश होने से पहले मनुष्य के मन में घमण्ड होता है।

नीतिवचन 18:14

ऐसी कौन सी बात है, जो सहना कठिन है?

हारी हुई आत्मा को सहना कठिन है।

नीतिवचन 18:17

कौन पहले सच्चा जान पड़ता है?

मुकद्दमे में जो पहले बोलता है, वही सच्चा जान पड़ता है।

नीतिवचन 18:19

दृढ़ नगर के ले लेने से कठिन क्या होता है?

चिढ़े हुए भाई को मनाना दृढ़ नगर के ले लेने से कठिन होता है।

नीतिवचन 18:21

जीभ के वश में क्या होते हैं?

जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं।

नीतिवचन 18:23

धनी दूसरों को कैसे उत्तर देता है?

धनी दूसरों को कड़ा उत्तर देता है।

नीतिवचन 19:2

इच्छा के अतिरिक्त एक मनुष्य के पास और क्या होना चाहिए?

इच्छा के अतिरिक्त एक मनुष्य के पास ज्ञान होना चाहिए।

नीतिवचन 19:5

झूठा साक्षी का क्या होगा?

झूठा साक्षी निर्दोष नहीं ठहरेगा।

नीतिवचन 19:7

जब निर्धन अपने मित्रों से बातें करते हुए उनका पीछा करता है तो क्या होता है?

जब निर्धन अपने मित्रों से बातें करते हुए उनका पीछा करता है, तो उनको नहीं पाता।

नीतिवचन 19:8

जो अपने प्राण को प्रेमी ठहराता है, वह क्या करता है?

जो अपने प्राण को प्रेमी ठहराता है, वह बुद्धि प्राप्त करता है।

नीतिवचन 19:11

बुद्धि से चलनेवाला मनुष्य अपराध करने पर क्या करता है?

बुद्धि से चलनेवाला मनुष्य अपराध को भूला देता है।

नीतिवचन 19:13

सदा टपकने वाले जल किसके समान हैं?

झगड़ालू पत्नी सदा टपकने वाले जल के समान हैं।

नीतिवचन 19:14

बुद्धिमती पत्नी कहाँ से मिलती है?

बुद्धिमती (बुद्धिमान) पत्नी यहोवा ही से मिलती है।

नीतिवचन 19:17

मनुष्य यहोवा को उधार कैसे देता है?

जो कंगाल पर अनुग्रह करता है, वह यहोवा को उधार देता है।

नीतिवचन 19:19

किसे बारम्बार बचाना होगा?

जो बड़ा क्रोधी (गुस्सा) है, उसे बारम्बार बचाना होगा।

नीतिवचन 19:20

मनुष्य अपने अन्तकाल में बुद्धिमान कैसे ठहर सकता है?

मनुष्य अपने अन्तकाल में सम्मति को सुनकर और शिक्षा को ग्रहण करके बुद्धिमान ठहर सकता है।

नीतिवचन 19:23

कौनसी बात से जीवन बढ़ता है?

यहोवा का भय मानने से जीवन बढ़ता है।

नीतिवचन 19:24

आलसी क्या करने में असमर्थ होता है?

आलसी अपने हाथ को थाली से अपने मुँह तक कौर उठाने में असमर्थ होता है।

नीतिवचन 19:26

जो पुत्र अपने बाप को उजाड़ता, और अपनी माँ को भगा देता है, वह किसका कारण होगा?

जो पुत्र अपने बाप को उजाड़ता, और अपनी माँ को भगा देता है, वह अपमान और लज्जा का कारण होगा।

नीतिवचन 19:28

कौनसी बात न्याय को उपहास में उड़ाता है?

अधर्मी साक्षी न्याय को उपहास में उड़ाता है।

नीतिवचन 20:2

जो राजा को रोष दिलाता है, उसके साथ क्या होता है?

जो राजा को रोष दिलाता है, वह अपना प्राण खो देता है।

नीतिवचन 20:3

सब मूर्ख क्या करने को तैयार होते हैं?

सब मूर्ख झगड़ने को तैयार होते हैं।

नीतिवचन 20:6

किस प्रकार के व्यक्ति को पाना कठिन है?

सच्चा व्यक्ति को पाना कठिन है।

नीतिवचन 20:9

ऐसी कौन सी बात है जो कोई भी अपने विषय में नहीं कह सकता?

कोई भी यह नहीं कह सकता कि मैंने अपने हृदय को पवित्र किया; अथवा मैं पाप से शुद्ध हुआ हूँ।"

नीतिवचन 20:11

लड़का भी किससे पहचाना जाता है?

लड़का भी अपने कामों से पहचाना जाता है।

नीतिवचन 20:13

किससे प्रीति रखने से मनुष्य दरिद्र हो जाएगा?

नींद से प्रीति रखने से मनुष्य दरिद्र हो जाएगा।

नीतिवचन 20:15

कौनसी बात अनमोल मणि के समान ठहरी है?

ज्ञान की बातें अनमोल मणि के समान ठहरी हैं।

नीतिवचन 20:17

छल-कपट से प्राप्त रोटी बाद में कैसा लगती है?

छल-कपट से प्राप्त रोटी बाद में कंकड़ों जैसा लगता है।

नीतिवचन 20:20

जो अपने माता-पिता को कोसता है, उसका क्या होता है?

जो अपने माता-पिता को कोसता है, उसका दिया बुझ जाता है।

नीतिवचन 20:22

किसी की बुराई का बदला लेने का प्रयास करने के बदले, मनुष्य को क्या करना चाहिए?

किसी की बुराई का बदला लेने का प्रयास करने के बदले, यहोवा की बाट जोहनी चाहिए कि वे उसे छुड़ाए।

नीतिवचन 20:25

बिना विचारे क्या करने से फंदे में फँसता है?

बिना विचारे मन्नत मानना फंदे में फँसता है।

नीतिवचन 20:28

राजा की रक्षा किसके कारण होती है?

राजा की रक्षा कृपा और सच्चाई के कारण होती है।

नीतिवचन 20:29

जवानों का गौरव क्या है?

जवानों का गौरव उनका बल है।

नीतिवचन 21:1

यहोवा जिधर वे चाहते उधर क्या मोड़ते देते हैं?

यहोवा राजा के मन को जिधर वे चाहते उधर उसको मोड़ देते हैं।

नीतिवचन 21:3

यहोवा को बलिदान से अधिक क्या अच्छा लगता है?

धर्म और न्याय करना, यहोवा को बलिदान से अधिक अच्छा लगता है।

नीतिवचन 21:6

जो धन झूठ के द्वारा प्राप्त होता है, उसका क्या होता है?

जो धन झूठ के द्वारा प्राप्त होता है, वह मृत्यु ही को ढूँढ़ता है।

नीतिवचन 21:7

दुष्ट लोगों को क्यों नाश कर दिया जाता है?

दुष्ट लोगों को इसलिए नाश कर दिया जाता है, क्योंकि वे न्याय का काम करने से इन्कार करते हैं।

नीतिवचन 21:10

दुष्ट जन की दृष्टि में क्या नहीं दिखाई देता है?

दुष्ट जन की दृष्टि में अनुग्रह नहीं दिखाई देता है।

नीतिवचन 21:11

जब ठट्ठा करनेवाले को दण्ड दिया जाता है, तब कौन बुद्धिमान हो जाता है?

जब ठट्ठा करनेवाले को दण्ड दिया जाता है, तब भोला बुद्धिमान हो जाता है।

नीतिवचन 21:14

गुप्त में दी हुई भेंट से क्या मिलता है?

गुप्त में दी हुई भेंट से क्रोध ठंडा होता है।

नीतिवचन 21:16

जो मनुष्य बुद्धि के मार्ग से भटक जाता है, उसका ठिकाना कहाँ होगा?

जो मनुष्य बुद्धि के मार्ग से भटक जाता है, उसका ठिकाना मरे हुओं के बीच में होगा।

नीतिवचन 21:19

चिढ़नेवाली पत्नी के संग रहने से कहाँ रहना उत्तम है?

चिढ़नेवाली पत्नी के संग रहने से, जंगल में रहना उत्तम है।

नीतिवचन 21:22

बुद्धिमान क्या नाश कर सकता है?

बुद्धिमान शूरवीरों के नगर के बल को नाश कर सकता है।

नीतिवचन 21:24

अभिमानी और अहंकारी का नाम क्या पड़ता है?

अभिमानी और अहंकारी का नाम "ठट्ठा करनेवाला" पड़ता है।

नीतिवचन 21:27

किस प्रकार का बलिदान घृणित है?

दुष्टों का बलिदान घृणित है।

नीतिवचन 21:30

यहोवा के विरुद्ध क्या चल नहीं सकती?

यहोवा के विरुद्ध न तो कुछ बुद्धि, और न कुछ समझ, न कोई युक्ति चल सकती है।

नीतिवचन 21:31

युद्ध के दिन जय कौन देता है?

युद्ध के दिन जय यहोवा देते हैं।

नीतिवचन 22:2

धनी और निर्धन में क्या समानता है?

यहोवा धनी और निर्धन के कर्त्ता हैं।

नीतिवचन 22:4

किसका का फल धन, महिमा और जीवन होता है?

नम्रता और यहोवा के भय मानने का फल धन, महिमा और जीवन होता है।

नीतिवचन 22:6

यदि लड़के को उसी मार्ग की शिक्षा दे जिसमें उसको चलना चाहिये, तो वह बुढ़ापे में क्या नहीं करेगा।

यदि लड़के को उसी मार्ग की शिक्षा दे जिसमें उसको चलना चाहिये, तो वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा।

नीतिवचन 22:7

उधार लेनेवाला और उधार देनेवाले के बीच सम्बंध क्या है?

उधार लेनेवाला उधार देनेवाले का दास होता है।

नीतिवचन 22:10

यदि ठट्ठा करनेवाले निकाल दिया जाए, तो क्या टूट जाएँगे?

यदि ठट्ठा करनेवाले निकाल दिया जाए, तो झगड़ा, वाद-विवाद और अपमान टूट जाएँगे।

नीतिवचन 22:13

आलसी क्या बहाना बनाता है?

आलसी बहने के रूप में कहता है कि बाहर तो सिंह होगा।

नीतिवचन 22:14

जो व्यभिचारिणी में गिर जाता है, वे क्या करता है?

जो व्यभिचारिणी में गिर जाता है, वह यहोवा को क्रोधित करता है।

नीतिवचन 22:15

कौनसी बात मूर्खता को लड़के से दूर करती है?

अनुशासन की छड़ी मूर्खता को लड़के से दूर करती है।

नीतिवचन 22:19

मनुष्य को किस पर भरोसा करना चाहिए?

मनुष्य को यहोवा पर भरोसा करना चाहिए।

नीतिवचन 22:22

कंगाल और दीन जन के साथ क्या नहीं करना चाहिए?

कंगाल और दीन जन पर अंधेर या पीस नहीं जाना चाहिए।

नीतिवचन 22:23

यहोवा उन लोगों का क्या करेंगे जो कंगाल का धन हर लेते हैं?

यहोवा उन लोगों उनका प्राण हर लेंगे जो कंगाल का धन हर लेते हैं।

नीतिवचन 22:25

क्यों किसी मनुष्य को क्रोधी मनुष्य का मित्र नहीं होना चाहिए?

किसी मनुष्य को क्रोधी मनुष्य का मित्र नहीं होना चाहिए क्योंकि वह मनुष्य उसकी चाल सीखेगा और फंदे में फँस जाएगा।

नीतिवचन 22:27

यदि किसी मनुष्य के पास भुगतान करने के साधन की कमी हो, तो वह क्या खो सकता है?

यदि किसी मनुष्य के पास भुगतान करने के साधन की कमी हो, तो वह अपना खाट खो सकता है।

नीतिवचन 22:28

क्या नहीं बढ़ाना चाहिए?

जो सीमा पुरखाओं ने बाँधी है, उस पुरानी सीमा को नहीं बढ़ाना चाहिए ।

नीतिवचन 23:1

कब मनुष्य को इस बात पर मन लगाकर सोचना चाहिए कि उसके सामने कौन है?

जब मनुष्य हाकिम के संग भोजन करने को बैठे, तब उसे इस बात पर मन लगाकर सोचना चाहिए कि उसके सामने कौन है।

नीतिवचन 23:4

बुद्धिमान जानता है कि कब क्या करना छोड़ना है?

बुद्धिमान जानता है कि कि धनी होने के लिये परिश्रम करना छोड़ना चाहिए।

नीतिवचन 23:5

जब कोई मनुष्य अपनी दृष्टि धन पर लगाता है, तो क्या होता है?

जब कोई मनुष्य अपनी दृष्टि धन पर लगाता है, तो वह चला जाता है।

नीतिवचन 23:7

जब एक दुष्ट जन आपको खाने और पीने के लिये नेवता देता है, तो उसका मन आप से क्यों लगा नहीं होता?

एक दुष्ट जन का मन आपसे नहीं लगा होता क्योंकि वह भोजन के कीमत की गणना करता है।

नीतिवचन 23:9

मूर्ख बुद्धि के वचनों पर कैसे प्रतिक्रिया करता है?

मूर्ख बुद्धि के वचनों को तुच्छ जानता है।

नीतिवचन 23:11

अनाथों का मुकद्दमा कौन लड़ेगा?

उनका सामर्थी छुड़ानेवाला अनाथों के लिये मुकद्दमा लड़ेंगे।

नीतिवचन 23:13

लड़के से क्या नहीं छोड़ना चाहिए?

लड़के की ताड़ना नहीं छोड़नी चाहिए।

नीतिवचन 23:16

पिता के मन को क्या प्रसन्न करता है?

जब उनका पुत्र सीधी बातें बोलता है, तब पिता का मन प्रसन्न होता है।

नीतिवचन 23:20

मनुष्य को किनके साथ संगति नहीं करनी चाहिए?

मनुष्य को दाखमधु के पीनेवालों या माँस के अधिक खानेवालों के साथ संगति नहीं करनी चाहिए।

नीतिवचन 23:23

मनुष्य को क्या मोल लेना चाहिए?

मनुष्य को सच्चाई, बुद्धि, शिक्षा और समझ को मोल लेना चाहिए।

नीतिवचन 23:26

पुत्र को अपने पिता की ओर क्या लगाना चाहिए?

पुत्र को अपना मन पिता को ओर लगाना चाहिए।

नीतिवचन 23:28

पराई स्त्री बहुत से मनुष्यों को क्या बना देती है?

पराई स्त्री बहुत से मनुष्यों को विश्वासघाती बना देती है।

नीतिवचन 23:29–30

कौन कहता है, हाय और कौन झगड़े-रगड़े में फँसता है?

जो दाखमधु देर तक पीता है, वह हाय कहता है और झगड़े-रगड़े में फँसता है।

नीतिवचन 23:33

जब दाखमधु लाल दिखाई देता है, तो उसे देखने वालों की आँखें क्या देखती हैं?

जब दाखमधु लाल दिखाई देता है, तब वह विचित्र वस्तुएँ देखता है।

नीतिवचन 23:35

पियक्कड़ कहता है कि जब वह होश में आएगा तो क्या करेगा?

पियक्कड़ कहता है कि जब वह होश में आएगा तो वह फिर मदिरा ढूँढ़ेगा।

नीतिवचन 24:1

मनुष्य को किससे डाह नहीं करना चाहिए?

मनुष्य को बुरे लोगों के विषय में डाह नहीं करना चाहिए।

नीतिवचन 24:3

घर किसके द्वारा स्थिर होता है?

घर समझ के द्वारा स्थिर होता है।

नीतिवचन 24:5

बलवान पुरुष से बेहतर क्या है?

ज्ञानी व्यक्ति बलवान पुरुष से बेहतर है।

नीतिवचन 24:8

जो सोच विचार के बुराई करता है उसे लोग क्या कहते हैं?

जो सोच विचार के बुराई करता है, उसे लोग दुष्ट कहते हैं।

नीतिवचन 24:10

किसी मनुष्य की शक्ति को बहुत कम कैसे दिखाया जाता है?

जब मनुष्य विपत्ति के समय साहस छोड़ देता है, तब उसकी शक्ति को बहुत कम दिखाता है।

नीतिवचन 24:12

परमेश्वर हर एक मनुष्य को क्या देंगे?

परमेश्वर हर एक मनुष्य के काम का फल उन्हें देंगे।

नीतिवचन 24:15

दुष्ट क्या करने के लिये घात में बैठें रहते हैं?

दुष्ट धर्मी के निवास को नष्ट करने के लिये घात में बैठें रहते हैं।

नीतिवचन 24:17–18

यदि कोई मनुष्य अपने शत्रु के गिरने पर आनन्दित होता है, तो यहोवा क्या करेंगे?

यहोवा देखेंगे और अप्रसन्न होंगे, और अपना क्रोध शत्रु पर से हटा लेंगे।

नीतिवचन 24:20

दुष्टों के दीपक का क्या होता है?

दुष्टों का दीपक बुझा दिया जाता है।

नीतिवचन 24:21

मनुष्य को किनके साथ नहीं मिलना चाहिए?

मनुष्य को राजा के विरुद्ध बलवा करनेवालों के साथ नहीं मिलना चाहिए।

नीतिवचन 24:24

जो दुष्ट से कहता है कि तू निर्दोष है, उसके साथ क्या होगा?

उस मनुष्य को हर समाज के लोग श्राप देते और जाति-जाति के लोग धमकी देते हैं।

नीतिवचन 24:26

कौनसी बात होठों पर चूमने के समान है?

सीधा उत्तर होठों पर चूमने के समान है।

नीतिवचन 24:29

मनुष्य को अपने पड़ोसी के विषय में क्या नहीं कहना चाहिए?

मनुष्य को यह नहीं कहना चाहिए कि वह अपने पड़ोसी को उसके काम के अनुसार पलटा देगा।

नीतिवचन 24:30–31

आलसी का खेत कैसे दिखता था?

आलसी के खेत में कटीले पेड़ भर गए थे, बिच्छू पौधों से ढँक गई थी, और पत्थर का बाड़ा गिर गया था।

नीतिवचन 24:34

आलसी पर डाकू के समान क्या आता है?

कंगालपन आलसी पर डाकू के समान आता है।

नीतिवचन 25:1

इस नीतिवचन के लेखक कौन थे?

इस नीतिवचन के लेखक राजा सुलैमान थे।

नीतिवचन 25:2

परमेश्वर की महिमा किस काम को करने में है?

परमेश्वर की महिमा, गुप्त रखने में है।

नीतिवचन 25:5

राजा की गद्दी कैसे स्थिर होती है?

राजा के सामने से दुष्ट को निकाल देने पर राजा की गद्दी स्थिर होती है।

नीतिवचन 25:7

बड़े लोगों के स्थान में खड़े होने से बेहतर क्या हो सकता है?

राजा के यह कहने की प्रतीक्षा करना कि, "इधर मेरे पास आकर बैठ" बड़े लोगों के स्थान में खड़े होने से बेहतर है।

नीतिवचन 25:7–8

यदि आपने अपने पड़ोसी के विषय में कुछ देखा है, तो आपको इसे जल्दी से अदालत में क्यों नहीं ले जाना चाहिए?

आपको इसे जल्दी से अदालत में नहीं ले जाना चाहिए क्योंकि आपका पड़ोसी आपको शर्मिंदा कर सकता है।

नीतिवचन 25:13

विश्वासयोग्य दूत अपने भेजनेवालों के लिये क्या करता है?

विश्वासयोग्य दूत अपने भेजनेवालों का जी ठंडा करता है।

नीतिवचन 25:15

न्यायी किससे मनाया जाता है?

धीरज धरने से न्यायी मनाया जाता है।

नीतिवचन 25:17

आपका पड़ोसी आपसे कैसे खिन्न कर सकता है?

यदि आप पड़ोसी के घर में बारम्बार अपने पाँव से जाओगे तो वह आपसे खिन्न कर सकता है।

नीतिवचन 25:19

उखड़े पाँव किसके समान होता है?

विश्वासघाती पर आपका भरोसा, उखड़े पाँव के समान होता है।

नीतिवचन 25:21

आपको अपने बैरी के लिये क्या करना चाहिए?

आपको अपने बैरी को रोटी खिलाना और पानी पिलाना चाहिए।

नीतिवचन 25:22

यहोवा उनके के लिये क्या करेंगे जो अपने बैरी को रोटी और पानी देते हैं?

यहोवा उनको फल देंगे जो अपने बैरी को रोटी और पानी देते हैं।

नीतिवचन 26:2

मनुष्य पर क्या नहीं पड़ता?

मनुष्य पर व्यर्थ श्राप नहीं पड़ता।

नीतिवचन 26:4

यदि कोई मनुष्य मूर्ख की मूर्खता में शामिल हो जाए, तो वह क्या बन जाएगा?

यदि कोई मनुष्य मूर्ख की मूर्खता में शामिल हो जाए, तो वह भी मूर्ख के तुल्य ठहरेगा।

नीतिवचन 26:6

अपने पाँव में कुल्हाड़ा मारना मानो क्या है?

मूर्ख के हाथ से सन्देशा भेजना मानो अपने पाँव में कुल्हाड़ा मारना है।

नीतिवचन 26:10

जो मूर्ख को मजदूरी में लगानेवाला है, वह कैसा होता है?

वह उस तीरन्दाज के जैसा है, जो अकारण सब को मारता है।

नीतिवचन 26:11

मूर्ख कुत्ते के समान क्यों है जो अपनी छाँट को चाटता है?

मूर्ख कुत्ते के समान है जो अपनी छाँट को चाटता है, क्योंकि मूर्ख अपनी मूर्खता को दोहराता है।

नीतिवचन 26:14

किवाड़ अपनी चूल पर घूमना किसके समान होता है?

किवाड़ अपनी चूल पर घूमना आलसी का अपनी खाट पर करवटें लेने के समान है।

नीतिवचन 26:16

आलसी अपने को कैसा समझता है?

आलसी अपने को ठीक उत्तर देनेवाले सात मनुष्यों से भी अधिक बुद्धिमान समझता है।

नीतिवचन 26:19

मनुष्य अपने पड़ोसी को धोखा देने के बाद क्या कहता है?

एक मनुष्य अपने पड़ोसी को धोखा देने के बाद कहता है, "मैं तो मजाक कर रहा था"

नीतिवचन 26:21

झगड़ालू क्या बढ़ाता है?

झगड़ालू झगड़े को बढ़ाता है।

नीतिवचन 26:24

मनुष्य अपने बैरी बात से कैसे छिपाता है?

मनुष्य अपने बैरी बात से अपने को भोला बनाता है।

नीतिवचन 26:27

जो गड्ढा खोदता है, उसके साथ क्या होता है?

जो गड्ढा खोदता है, वही उसी में गिरेगा।

नीतिवचन 26:28

चिकनी चुपड़ी बात बोलनेवाला किसका कारण होता है?

चिकनी चुपड़ी बात बोलनेवाला विनाश का कारण होता है।

नीतिवचन 27:1

मनुष्य को कल के दिन के विषय डींग क्यों नहीं मारना चाहिए?

मनुष्य को कल के दिन के विषय डींग नहीं मारना चाहिए क्योंकि वह नहीं जानता कि दिन भर में क्या होगा।

नीतिवचन 27:3

रेत के बोझ से अधिक भारी क्या है?

मूर्ख का क्रोध रेत के बोझ से भी अधिक भारी होता है।

नीतिवचन 27:6

बैरी आपको धोखा देने के लिये क्या कर सकता है?

बैरी आपको धोखा देने के लिये अधिक चुम्बन कर सकता है।

नीतिवचन 27:7

किसको सब कड़वी वस्तुएँ भी मीठी जान पड़ती हैं?

भूखे को सब कड़वी वस्तुएँ भी मीठी जान पड़ती हैं।

नीतिवचन 27:10

दूर रहनेवाले भाई से कहीं उत्तम क्या है?

प्रेम करनेवाला पड़ोसी, दूर रहनेवाले भाई से कहीं उत्तम है।

नीतिवचन 27:12

बुद्धिमान मनुष्य विपत्ति को आती देखकर क्या करता है?

बुद्धिमान मनुष्य विपत्ति को आती देखकर छिप जाता है।

नीतिवचन 27:14

ऊँचे शब्द से आशीर्वाद कब श्राप गिना जाता है?

भोर को उठकर, ऊँचे शब्द से आशीर्वाद देना श्राप गिना जाता है।

नीतिवचन 27:15–16

वायु को रोकना किसके समान है?

झगड़ालू पत्नी को रोकना मानो वायु को रोकने के समान है।

नीतिवचन 27:17

लोहा लोहे को चमका देना किसके समान है?

मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है, वह उस लोहे के समान है जो लोहे को चमका देता है।

नीतिवचन 27:20

विनाशलोक के समान क्या तृप्त नहीं होती?

मनुष्य की आँखें कभी तृप्त नहीं होती, जैसे विनाशलोक नहीं होता।

नीतिवचन 27:22

मूर्ख की मूर्खता किससे नहीं जा सकती?

मूर्ख को कूटने से भी मूर्ख की मूर्खता नहीं जा सकती।

नीतिवचन 27:24

सम्पत्ति कब तक ठहरती है?

सम्पत्ति सदा नहीं ठहरती।

नीतिवचन 27:26

भेड़ों के बच्चे घराने के लिये क्या होंगे?

भेड़ों के बच्चे घराने के लिये वस्त्र होंगे।

नीतिवचन 28:1

जब कोई पीछा नहीं करता तब भी कौन भागते हैं?

दुष्ट लोग जब कोई पीछा नहीं करता तब भी भागते हैं।

नीतिवचन 28:4

जो लोग व्यवस्था को छोड़ देते हैं, वे किसकी प्रशंसा करते हैं?

जो लोग व्यवस्था को छोड़ देते हैं, वे दुष्ट की प्रशंसा करते हैं।

नीतिवचन 28:6

क्या अधिक उत्तम है धन या खराई?

खराई धन से अधिक उत्तम है।

नीतिवचन 28:8

जो अपना धन ब्याज से बढ़ाकर धनी होता है, उसके सम्पत्ति का क्या होता है?

वह उसके लिये बटोरता है जो कंगालों पर अनुग्रह करता है।

नीतिवचन 28:10

कौन अपने खोदे हुए गड्ढे में आप ही गिरता है?

जो सीधे लोगों को भटकाकर कुमार्ग में ले जाता है वह अपने खोदे हुए गड्ढे में आप ही गिरता है।

नीतिवचन 28:12

जब दुष्ट लोग प्रबल होते हैं, तब मनुष्य कैसी प्रतिक्रिया देता है?

जब दुष्ट लोग प्रबल होते हैं, तब मनुष्य अपने आपको छिपाता है।

नीतिवचन 28:13

पापी पर कैसे दया की जाएगी?

पापी अपने पापों को मान लेता और छोड़ भी देता है, तब उस पर दया की जाएगी।

नीतिवचन 28:16

शासक कैसे दीर्घायु हो सकता है?

यदि शासक लालच का बैरी हो, तो वह दीर्घायु हो सकता है।

नीतिवचन 28:17

कौन सी बात मनुष्य को गड्ढे में गिरा सकती है?

किसी प्राणी की हत्या का अपराधी होना मनुष्य को गड्ढे में गिरा सकती है।

नीतिवचन 28:19

कोई मनुष्य कंगालपन से कैसे घिरा रह सकता है?

यदि कोई मनुष्य निकम्मे लोगों की संगति करता है, तो वह कंगालपन से घिरा रहता है।

नीतिवचन 28:22

लोभी जन धन को प्राप्त कैसे करता है?

लोभी जन धन प्राप्त करने में उतावली करता है।

नीतिवचन 28:25

यहोवा पर भरोसा रखने का परिणाम क्या होता है?

जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह हष्ट-पुष्ट हो जाता है।

नीतिवचन 28:27

जो मनुष्य निर्धन से दृष्टि फेर लेता है, वह क्या पाता है?

जो मनुष्य निर्धन से दृष्टि फेर लेता है, वह श्राप पर श्राप पाता है।

नीतिवचन 29:1

जो बार बार डाँटे जाने पर भी हठ करता है, उसके साथ क्या होगा?

जो बार बार डाँटे जाने पर भी हठ करता है, वह अचानक नष्ट हो जाएगा और उसका कोई भी उपाय काम न आएगा।

नीतिवचन 29:3

कौन-सी बात मनुष्य का धन उड़ा देती है?

वेश्याओं की संगति मनुष्य का धन उड़ा देती है।

नीतिवचन 29:6

बुरे मनुष्य के लिए फंदा क्या होता है?

बुरे मनुष्य का अपराध उसके लिए फंदा होता है।

नीतिवचन 29:8

किस प्रकार के लोग क्रोध को ठंडा करते हैं?

बुद्धिमान लोग क्रोध को ठंडा करते हैं।

नीतिवचन 29:10

हत्यारे लोग किसकी खोज करते हैं?

हत्यारे लोग सीधे लोगों के प्राण की खोज करते हैं।

नीतिवचन 29:11

बुद्धिमान अपने मन का क्या करता है?

बुद्धिमान अपने मन को रोकता, और शान्त कर देता है।

नीतिवचन 29:14

राजा अपनी गद्दी को सदैव कैसे स्थिर कर सकता है?

राजा कंगालों का न्याय सच्चाई से चुकाकर अपनी गद्दी को सदैव स्थिर कर सकता है।

नीतिवचन 29:17

बेटे की ताड़ना का क्या परिणाम होता है?

ताड़ना पाया हुआ बेटा अपने माता-पिता को चैन देगा।

नीतिवचन 29:18

यदि लोग व्यवस्था को नहीं मानते हैं, तो वे क्या हो जाते हैं?

यदि लोग व्यवस्था को नहीं मानते हैं, तो वे निरंकुश हो जाते हैं।

नीतिवचन 29:20

किससे अधिक मूर्ख से आशा है?

बातें करने में उतावली करनेवाले मनुष्य से अधिक मूर्ख से आशा है।

नीतिवचन 29:23

किस प्रकार का मनुष्य महिमा का अधिकारी होता है?

नम्र आत्मावाला महिमा का अधिकारी होता है।

नीतिवचन 29:25

यहोवा जो उन पर भरोसा रखते हैं, उनके लिये क्या करते हैं?

यहोवा उनका स्थान ऊँचा कर देते है, जो उन पर भरोसा रखते हैं।

नीतिवचन 29:27

धर्मी लोग किनसे घृणा करते हैं?

धर्मी लोग कुटिल मनुष्य से घृणा करते हैं।

नीतिवचन 30:1

इस नीतिवचन में किनके प्रभावशाली वचन लिखे गए हैं?

इस नीतिवचन में याके के पुत्र आगूर के प्रभावशाली वचन लिखे गए हैं।

नीतिवचन 30:3

लेखक ने क्या प्राप्त नहीं किया है?

लेखक ने बुद्धि प्राप्त नहीं किया है।

नीतिवचन 30:6

जो परमेश्वर के वचनों में कुछ बढ़ाता है, उसके साथ क्या होगा?

परमेश्वर उसको डाँटेंगे जो उनके वचनों में कुछ बढ़ाता है।

नीतिवचन 30:8

लेखक कितने धनी बनना चाहते हैं?

लेखक न तो निर्धन होना चाहते हैं और न ही धनी।

नीतिवचन 30:9

यदि पेट भर जाए तो लेखक को किस बात का भय है कि वह करेगा?

लेखक को यह भय है कि यदि पेट भर जाए, तो वह यहोवा का इनकार कर देते।

नीतिवचन 30:11–12

किनका मैल धोया नहीं गया?

जो अपने पिता को श्राप देते और अपनी माता को धन्य नहीं कहते, उनका मैल धोया नहीं गया।

नीतिवचन 30:14

घमण्ड से भरी पीढ़ी दीन लोगों के साथ क्या करती है?

घमण्ड से भरी पीढ़ी दीन लोगों को मिटा डालते हैं।

नीतिवचन 30:15–16

ऐसी कौन सी चार वस्तुएँ हैं जो कभी "बस" नहीं कहती?

चार वस्तुएँ जो कभी "बस" नहीं कहतीं, वे अधोलोक, बाँझ की कोख, भूमि जो जल पी पीकर तृप्त नहीं होती, और आग हैं।

नीतिवचन 30:19

लेखक के समझ से परे दूसरी बात क्या है जो अधिक कठिन है?

चट्टान पर सर्प की चाल लेखक के समझ से परे है।

नीतिवचन 30:22

लेखक के अनुसार पहली बात क्या है जिसके कारण पृथ्वी काँपती है?

दास का राजा हो जाना ही पहली बात है जिसके कारण पृथ्वी काँपती है।

नीतिवचन 30:27

लेखक को टिड्डियों के विषय में क्या अद्‌भुत लगता है?

लेखक को टिड्डियाँ अद्‌भुत लगते हैं क्योंकि उनका कोई राजा नहीं होता, तो भी वे सब की सब दल बाँध बाँधकर चलते हैं।

नीतिवचन 30:30

कौन किसी के डर से नहीं हटता?

सिंह किसी के डर से नहीं हटता।

नीतिवचन 30:32

जिसने बुरी युक्ति बाँधी हो, उस मनुष्य को क्या करना चाहिए?

जिस मनुष्य ने बुरी युक्ति बाँधी हो, उसे अपने मुँह पर हाथ रखना चाहिए।

नीतिवचन 30:33

क्रोध क्या उत्पन्न करता है?

क्रोध झगड़ा उत्पन्न करता है।

नीतिवचन 31:1

यह नीतिवचन किसने लिखा?

लमूएल राजा ने यह नीतिवचन लिखा।

नीतिवचन 31:3

राजा को अपना जीवन किसके वश में नहीं देना चाहिए?

उन्हें अपना जीवन उनके वश में नहीं देना चाहिए जो राजाओं का पौरूष खा जाती हैं।

नीतिवचन 31:5

रईस मदिरा पीने पर क्या भूल जाता है?

रईस मदिरा पीने पर व्यवस्था को भूल जाता है।

नीतिवचन 31:7

उदास मनवाले मदिरा पीने पर क्या भूल जाते हैं?

उदास मनवाले मदिरा पीने पर अपनी दरिद्रता को भूल जाते हैं।

नीतिवचन 31:9

राजा को किसका न्याय करना चाहिए?

राजा को दीन दरिद्रों का न्याय करना चाहिए।

नीतिवचन 31:10

किसका मूल्य मूँगों से भी बहुत अधिक है?

भली पत्नी का मूल्य मूँगों से भी बहुत अधिक है।

नीतिवचन 31:12

भली पत्नी अपने जीवन के सारे दिनों में क्या करती हैं?

वह अपने जीवन के सारे दिनों में उससे बुरा नहीं, वरन् भला ही व्यवहार करती है।

नीतिवचन 31:15

भली पत्नी कब उठ बैठती है?

वह रात ही को उठ बैठती है।

नीतिवचन 31:17

भली पत्नी अपनी कमर किससे कसती है?

वह अपनी कमर बल के फेंटे से कसती है।

नीतिवचन 31:20

भली पत्नी किनके लिये मुट्ठी खोलती है?

वह दीन के लिये मुट्ठी खोलती है।

नीतिवचन 31:23

भली पत्नी का पति कहाँ पर बैठता है?

उसका पति सभा में देश के पुरनियों के संग बैठता है।

नीतिवचन 31:26

भली पत्नी के वचन में क्या होता है?

भली पत्नी के वचन में कृपा की शिक्षा होती है।

नीतिवचन 31:28

भली पत्नी के पुत्र उन्हें क्या कहते हैं?

उनके पुत्र उन्हें धन्य कहते हैं।

नीतिवचन 31:30

किस प्रकार की स्त्री की प्रशंसा की जाएगी?

जो स्त्री यहोवा का भय मानती है, उसकी प्रशंसा की जाएगी।